12.07 hrs.

BUSINESS ADVISORY COMMITTEE
THIRTEENTH REPORT

The Minister of Parliamentary affairs (Shri Satya Narayan Sinha): I beg to move the following:

"That this House agrees with the Thirteenth Report of the Business Advisory Committee presented to the House on the 22nd February, 1963."

Mr. Speaker: The question is:

"That this House agrees with the Thirteenth Report of the Business Advisory Committee presented to the House on the 22nd February, 1963."

The motion was adopted.

12.07½ hrs

MOTION ON ADDRESS BY THE PRESIDENT—*contd.*

Mr. Speaker: The House will now take up further consideration of the following motion moved by Shri R. S. Pandey and seconded by Dr. K. L. Rao on the 20th February, 1963, namely:—

"That an Address be presented to the President in the following terms:—

"That the Members of Lok Sabha assembled in this Session are deeply grateful to the President for the Address which he has been pleased to deliver to both Houses of Parliament assembled together on the 18th February, 1963.'"

and also further consideration of amendments moved on the 20th February, 1963. Shri Braj Raj Singh is to continue his speech.

श्री बृजराज सिंह (बरेली) : अध्यक्ष महोदय मैं कह रहा था कि चीन को हमने भाई बनाया और भाई-भाई का नारा लगाया। चीन ने भी पंचशील के सिद्धान्तों को माना और उसके बाद भी हमला किया और एक बड़ा धोखा हमारी सरकार को हुआ। उस धोखे से सरकार को सबक लेना चाहिये था। कई बार कहा भी गया है कि हमें सोते हुए पकड़ा गया किन्तु अब हमारी आंखें खुल गई हैं। परन्तु देखने को यह मिला है कि हम एक नया भ्रम अपने मन में उत्पन्न कर रहे हैं यह भ्रम कि शायद कम्युनिज्म में कोई दो गुट्ट बन गये हैं। एक गुट्ट चाहे भले ही हमारा विरोध करे और हम पर हमला करे परन्तु दूसरा गुट्ट अभी हमसे भाई चारा निभाने के लिए तैयार है। हमारे दाहिनी तरफ बैठे हुए कम्युनिस्ट भाई हमारे देश और उस नये गुट्ट के बीच में एक दलाली कर रहे हैं। एक भाईचारा और एक रिश्ता पैदा करने की बात कर रहे हैं। हमें देखना पड़ेगा कि जब हमने चीन को भाई बनाया और वहां से हमें धोखा मिला उधर रूस बराबर कह रहा है कि हिन्दुस्तान हमारा दोस्त जरूर है परन्तु चीन हमारा भाई है, मौका आने पर हम भाई की मदद करेंगे। परन्तु फिर भी ऐसा नशा सा हमारे ऊपर तारी हो चुका है कि हम उसके मना करने के बावजूद भी इस बात की जिद में लगे हुए हैं कि हम उसको भाई बना कर ही छोड़ेंगे और हमारे इस देश के उन्हीं के पैदा किये हुए कम्युनिस्ट उस बीच में दलाली कर रहे हैं। हमारी सरकार उन्हें दलाली के पैसे भी देती है कीमत भी दलाली की अच्छी देती है। उनको वह बतलाती है कि यह सेंट परसेंट नेशनलिस्ट्स हैं। मुझे समझ में नहीं आता कि इस प्रकार पहले एक गुट्ट को भाई बना कर धोखा खाया, अब इस आशा पर कि उन दोनों गुटों में आपस में मतभेद हो गया है, दूसर गुट्ट की तरफ भाईचारे का हाथ बढ़ाया जा रहा है। ईश्वर जाने क्या होने